भारत में राष्ट्रीय जागरण

भारत में राष्ट्रवाद की भावना के उदय और राष्ट्रीय जागरण आंदोलन के विकास का साझा इतिहास रहा है। मुख्य रूप से 1857 की क्रांति के बाद भारत में कई सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारणों से राष्ट्रवाद का उदय हुआ। राष्ट्रवादी भावनाओं के विकास का आधार प्रथमतः सांस्कृतिक था। जब अपनी संस्कृति, सभ्यता, विचार व्यवहार आदी को यूरोपीय सभ्यता से श्रेष्ठ साबित करने के क्रम में भारत में एक बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुया, जिसने भारत के इतिहास से ढूंढ ढूंढकर भारतीयों की सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं कला साहित्य की समृद्धता को विश्व के सामने रखा और वर्तमान भारतीय समाज में व्याप्त असभ्य, शोषणकारी तत्वों को दूर करने के लिए जन जागरूकता अभियान चलाया। इस क्रम में राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फूले, पंडिता रमाबाई आदी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनके सुधार संबंधी प्रयासों ने भारतीय रूढिवादी समाज को झकझोर दिया और भारतीय समाज में नवजागरण का संचार हुआ। भारत में सांस्कृतिक अभ्यूदय के रूप में आयी यह राष्ट्रवादी चेतना मुख्यतः सामाजिक सुधारों के रूप में सामने आयी। लेकिन, एक राजनीतिक चेतना के रूप में इसका प्रारम्भ 1885 में कांग्रेस की स्थापना के साथ हुआ। जिसका उद्देश्य प्रारम्भ में अंग्रेजों से सहयोग के माध्यम से भारतीयों के जीवन स्तर में सुधार, अंग्रेजी शासन व्यवस्था में भारतीयों की भागीदारी, भारतीयों की शिक्षा, भारत की आर्थिक स्थिति में सुधार आदी था। भारत का राष्ट्रीय जागरण 1905 की एक प्रमुख घटना बंग भंग के बाद तथा कांग्रेस में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रवेश के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में परिणत हो गया। अब इनका एकमात्र उद्देश स्वराज की प्राप्ति हो गया। इस प्रकार राजनीतिक राष्ट्रवाद के उदय ने भारत में औपनिवेशिक सत्ता के विरूद्ध संघर्ष को तेज किया और औपनिवेशिक दासता से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

भारत में राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास कई राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और धार्मिक तत्वों से प्रभावित हुआ। पश्चिमी शिक्षा व सभ्यता संस्कृति के प्रचार प्रसार ने भारतीयों को विश्व में होने वाली अनेकों घटनाओं से परिचित कराया तथा उन्हें समानता, स्वतंत्रता, क्रांति, राष्ट्रवाद आदी अवधारणाओं से परिचित कराया। अंग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा भारतीय प्राकृतिक, आर्थिक, भौतिक संसाधनों के शोषण ने भारतीयों के अंदर राष्ट्रवाद के उदय और उसके विकास में मुख्य भूमिका निभाई। अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले अत्याचार, दमनकारी व्यवहार, नस्ली भेदभावपूर्ण नीतियों आदि ने भी भारतीय राष्ट्रवाद को विकसित करने में मुख्य भूमिका निभाई। भारतीय राष्ट्रवाद के उदय और विकास के प्रमुख कारणों को संक्षेप में निम्न बिन्दूओं के तहत् समझा जा सकता है–

1. **राजनीतिक कारण :–** राजनीतिक कारणों में नए राजनीतिक संगठनों का निर्माण जैसे, **लैंड होल्डर्स सोसायटी, बंबई एसोसिएशन, पूना सार्वजनिक सभा** आदी ने सक्रिय रूप से अपने क्षेत्र विशेष में राजनीतिक शिक्षण का कार्य किया और राजनीतिक चेतना को प्रज्वलित किया। ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीयों का शोषण, भारतीय साम्राज्यों को हड़पने की नीति, नए नए दमनकारी नीतियों का प्रतिपादन तथा सबसे बढकर 1857 के संग्राम ने भारतीयों को ब्रिटिश शासन के विरूद्ध राजनीतिक रूप से एकिकृत किया।

2. **समाजिक एवं धार्मिक कारण :–** भारत में राष्ट्रीय चेतना कई धार्मिक और सामाजिक आंदोलनों से गुजरकर राजनीतिक स्तर तक पहुंची। पश्चिमी शिक्षा के प्रभावस्वरूप भारत के अंग्रेजी पढ़े लिखे प्रबुद्ध वर्ग

ने भारतीय समाज में व्याप्त संकिर्णवादी वर्ण व्यवस्था पर आधारित परम्परागत धार्मिक दृष्टिकोण तथा व्यवहार में सुधार के लिए कई धार्मिक और सामाज सुधार आंदोलनों का नेतृत्व किया। इसके लिए ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी जैसे कई संगठनों का निर्माण हुआ। इन ओदोलनों ने समाज में व्याप्त लगभग सभी बुराइयों जैसे लिंग असमानता, छुआछुत, जाति प्रथा, सती प्रथा, बालिका शिशु हत्या, बहुविवाह, बालविवाह, धर्मान्धता तथा भाग्यवाद आदी का विरोध किया और लोगों में जागरूकता का प्रचार प्रसार किया। समाज सुधार आंदोलन का नेतृत्व बंगाल में जहां राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस आदी द्वारा, उत्तर पश्चिम भारत में आर्य समाज द्वारा तथा दक्षिण भारत में एम. जी. रानाडे और दादाभाई नौरोजी द्वारा किया गया था।

3. **सांस्कृतिक और शैक्षणिक कारण :–**औपनिवेशिक काल में आधुनिक शिक्षा के प्रचार प्रसार से भारतीय पाश्चात्य विचारों और तत्कालीन विश्व में होंने वाली घटनाओं से परिचित हुए जिससे जनमानस के राजनीतिक सोंच को नई दिशा मिली। पाश्चात्य शिक्षा का प्रचार यद्यपि प्रशासनिक आवश्यकताओं के लिए किया गया था, लेकिन इससे नवशिक्षित भारतीय मध्य वर्ग में राजनीतिक चेतना जागृत हुई और लोग अपने नागरिक अधिकारों से परिचित हुए। इस नवजागृत भारतीय मध्यवर्ग द्वारा लोंगों को जागरूक करने के लिए कई सामाचारपत्रों का प्रकाशन शुरू किया जिन्होंने जनमत को बनाने तथा उसके राष्ट्रीय प्रसार में मुख्य भूमिका निभाई। द इण्डियन मिरर, द बंगाली, अमृत बाजार, केसरी आदी पत्रिकाओं ने प्रतिनिधि सरकार, स्वतंत्रता तथा प्रजातंत्रीय संस्थाओं आदी के विचार को जनता में लोकप्रिय बनाया। वास्तव में जनता की सांस्कृतिक चेतना तथा शैक्षणिक सुविधाओं के प्रभाव में ही जनता में राष्ट्रीय चेतना जागृत हुई।

4. **आर्थिक कारण :–** औपनिवेशिक शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला था। ब्रिटिश आर्थिक नीति के कारण देश में बेकारी फैल गई और भूखमरी तक की स्थिति का भारतीय जनमानस ने सामना किया। इन स्थितियों ने शिक्षित वर्ग में असन्तोष उत्पन्न किया और भारतीयों को यह विश्वास होने लगा कि उनकी बिगड़ती हुई आर्थिक दशा के लिए अंग्रेज ही जिम्मेदार हैं। उन्हें यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज उनको लूट कर अपना खजाना भर रहे हैं। इस प्रकार आर्थिक असंतोष से उत्पन्न हुई पीड़ा ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्पष्ट है कि आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करने में अनेक सामाजिक और बौद्धिक तत्वों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।